II SIQE II

STATE INITIATIVE FOR QUALITY EDUCATION

वर्तमान में राज्य सरकार के द्वारा प्राथमिक शिक्षा को बेहतर एवं गुणवत्ता पूर्ण बनाने के लिए ग्राम पंचायत के आदर्श विद्यालयों के साथ प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक को समन्वित कर माध्यमिक शिक्षा के सभी विद्यालयों में कक्षा 1 से 5 तक संचालित सी सी ई को ही माध्यमिक एवं समन्वित विद्यालयों में SIQE (स्टेट इनिशिएटिव फोर क्वालिटी एजूकेशन) के नाम से लागू किया गया है । सबके लिए बेहतर एवं गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा ।

सभी शिक्षक पढा सकते है और सभी बच्चे पढ सकते है ; आवश्यकता है वातावरण उपलब्ध करवाने की । इसी उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए राज्य सरकार ने यूनिसेफ, बोध शिक्षा समिति, रमसा ; एस एस ए एवं डाईट के माध्यम से एक अतिमहत्त्वपूर्ण कार्ययोजना कक्षा 1 से 5 तक अध्ययन करने वाले बालकों के लिए सभी विद्यालयों में प्राथमिक शिक्षा को अधिगम योग्य एवं सरल आनन्ददायी रूचिपूर्ण कक्षा कक्षीय प्रक्रियाओं व शिक्षक विद्यार्थी के अन्तर्सम्बन्ध को मजबूत बनाने की दृष्टि से चरणवार पद्धति से बोधगम्य बनाने हेतु पाठ्यक्रम तैयार किया है । सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन के साथ –साथ आकलन की पद्धति को स्वीकार किया गया जिसमें विद्यार्थी के पूर्व ज्ञान को एवं समस्त परिवेशिय जानकारी को भी अध्ययन में एवं आकलन में सम्मिलित किया गया । शिक्षक क्या जानता है इसके स्थान पर बालक क्या जानता है इस बात पर जोर दिया गया क्योंकि बालक विद्यालय में आने से पूर्व अपने घर परिवार में 6 वर्ष तक की आयु तक कुछ ना कुछ आसपास के परिवेश से सीखता है । जिसका उसके अध्ययन से कोई सरोकार नही होता पर वह जानता जरूर है ।

स्टेट इनिशिएटिव फोर क्वालिटी एजूकेशन – एक गतिविधि आधारित शिक्षण अधिगम प्रक्रिया है और सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन एक समन्वित कार्यक्रम है । बाल केन्द्रित गतिविधि आधारित शिक्षण करवाना और सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन और आकलन करना इस कार्यक्रम का मूल आधार है । ये दोनो पक्ष आपस में जुडे हुए है । अगर हम सरलतम रूप में देखे तो प्रतयेक बालक को व्यक्तिश5 जाने बिना

उसकी आवश्यकता के अनुरूप शिक्षण कार्य करवाया जाना सम्भव नही होगा । ये बाल केन्द्रित शिक्षण की आवश्यक एवं प्राथमिक शर्त है । अतः **सी सी ई** के साथ **सी सी पी** को जोडकर **एस आई क्यू ई** कार्यक्रम का संचालन किया जा रहा है । यह एक ऐसा कार्यक्रम है जिसमें प्रत्येक बच्चे के सीखने के स्तर गति एवं रूचि को ध्यान में रखते हुए शिक्षण एवं आकलन का कार्य शिक्षक द्वारा किया जाता है। अब पारम्परिक chalk and talk के स्थान पर activity and child based teaching पर बल दिया गया है ।

एस आई क्यू ई की प्रमुख शब्दावली निम्नानुसार है – अध्यापक योजना डायरी – कक्षा 1 से 5 तक अध्यापन करवाने वाले शिक्षकों को एक एक अध्यापक योजना डायरी उपलब्ध करवायी जायेगी जिसमें वह अपने अध्यापन विषय की कक्षा वार साप्ताहिक एवं पाक्षिक योजना सम्पूर्ण कक्षा के लिए उपसमूह के लिए व कक्षा स्तर से नीचे के बच्चों के लिए तैयार करेगा एवं संस्था प्रधान या हेड टीचर से अवलोकन करवायेगा एवं आवश्यक मार्गदर्शन प्राप्त करेगा । संस्था प्रधान एवं हेड टीचर सप्ताह मे कम से कम दो

बार कक्षा 1 से 5 तक की कक्षाओं का विषय बार एवं अध्यापकवार कक्षा शिक्षण का अवलोकन न्यूनतम 20 मिनिट तक करेगा। अवलोकन । कक्षा कक्ष अवलोकन प्रपत्र में किया जाकर अध्यापक के शिक्षण सम्बन्धी किये गये प्रयासों का आकलन कर अवगत करवाया जायेगा ।

मासिक बैठक इस योजना की प्रगति एवं बालक के सीखने की गति एवं व्यवहारगत परिवर्तन की जानकारी देने के लिए प्रत्येक माह के अन्तिम कार्य दिवस को अभिभावको की बैठक आयोजित कर अवगत करवाया जायेगा ।

1 आधार रेखा मूल्यांकन – ऐसे बच्चे जो किसी भी ऐसे विद्यालय से जहॉ पर पूर्व में एस आई क्यू ई का नही संचालित है के बच्चे का न्यूनतम अधिगम क्षास्तर ज्ञात करने के लिए आधार रेखा आकलन लिया जाना अनिवार्य है और उसे दर्ज किया जाना चाहिए ताकि उसके अनुरूप उसकीशिक्षण योजना बनायी जा सके एवं समूह निर्धारण किया जा सके ।

2. पद स्थापन कक्षा–ऐसे सभी बच्चे जो किसी भी विद्यालय से कक्षा की के बच्चों का पदस्थापन करना जो एस आई क्यू ई से क्रमोन्नत होकर अगली कक्षा में आया है । बच्चों की कक्षा का स्तर निर्धारण समूह निर्धारण आधार रेखा आकलन एवं पदस्थापन के आधार पर **समूह एक कक्षा स्तर के बच्चे व समूह दो कक्षा स्तर से नीचे के स्तर के बच्चे** ।

पोर्ट फोलियों एस. आई. क्यू. ई. के अन्तर्गत एक अति महत्त्वपूर्ण अभिलेख है जो प्रत्येक बालक का कक्षा 1 से 5 तक के विषयों से सम्बन्धी किय`गये कार्यो एवं परखों का आकलन अभिलेख पत्र है जिसे न्यूनतम 5 वर्षो तक सुरक्षित रखना होगा । पोर्ट फोलियों में मासिक रूप में कम से कम 4 कार्य पत्रक लगाये जाने चाहिए लो बच्चे के द्वारा किये गये कार्य को प्रदर्शित करते है साथ ही उस पर अभिभावक के हस्ताक्षर करवाये । अशुद्धियों पर गोला न करे रेखंकित करे सुधारकर पुनः लिखे/लिखवाये । शिक्षक हस्ताक्षर करे दिनांक अंकित करे । साप्ताहिक समीक्षा पाक्षिक योजना निर्माण सम्पूर्ण कक्षा के लिए शिक्षण उद्देश्यों के मध्यनजर शिक्षण योजना ग्रेड निर्धारण आकलन आदि ।

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय कुचील अजमेर

पोर्ट फोलियों सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन 2017–18 (SIQE)

फोटो

डाईस कोड

0	8	2	1	0	1	0	3	9	1	4

नोडल – किशनगढ ब्लॉक– सिलोरा जिला– अजमेर

छात्र का नाम – .....कक्षा ..... वर्ग .....
जाति ..... श्रेणी ..... धर्म .....
जन्म तिथि अंको में .....शब्दों में .....
रक्त ग्रुप .....रोल न0.....
प्रवेशांक .....प्रवेश दिनांक .....आधार नम्बर छात्र.....
.....
पिता का नाम श्री .....पिता का आधार..... मोबाईल न0 .....
माता का नाम श्रीमती .....माता का आधार .....
भामाशाह कार्ड नम्बर .....
धर का पता – मोहल्ला .....वार्ड .....गॉव .....
तहसील.....जिला.....पिन नम्बर .....
छात्र के हस्ताक्षर ..... अभिभावक के हस्ताक्षर .....
कक्षाध्यापक का नाम श्री ....कक्षाध्यापक के हस्ताक्षर .....
हेड टीचर का नाम.....पद .....
अन्य .....

संस्था प्रधान का नाम .....

प्रधानाचार्य
रा उ मा वि कुचील अजमेर

रचनात्मक आकलन (फोरमेटिव असेसमैण्ट) प्रति दो माह में दो बार (FA-1 FA-2) प्रत्येक माह के अन्त में सभी बच्चो का आकलन कर दर्ज करना A- बिना शिक्षक की विशेष सहायता के सीखने वाला बालक B- शिक्षक से कभी – कभी सहायता प्राप्त करने वाला बालक C- शिक्षक से बार– बार सहयता प्राप्त करने वाला बालक । ग्रेड निर्धारण करना और आगे की शिक्षण योजना तैयार करना एवं कमजोर एवं कक्षा स्तर से नीचे के बच्चो के लिए विशेष कार्य योजना तैयार करना ओर कक्षा उन्नयन के प्रयास करना व कक्षा स्तर पर लाना । प्रत्येक बच्चे की संसूचकों के आधार पर अधिगम स्तर के अनुरूप चैक लिस्ट तैयार करना ।

योगात्मक आकलन (समेटिव असेसमेण्ट) प्रत्येक ढाई माह के अन्तराल पर शिक्षण अधिगम कौशलों के आधार पर कक्षा 1 से 5 तक के विद्यार्थियों का पेपर पेंन्सिल परख आयोजित कर पाठ्यक्रम संसूचकों के आधार पर आकलन करना जिसे SA-1 TO SA-4 तक वर्ष में चार बार करना एव विद्यार्थी प्रगति अभिलेख में दर्ज करना ।

लहरकक्ष – एस आई क्यू के अन्तर्गत सभी कक्षाओं के लिए लहरकक्ष की स्थापना की जानी हे जिसमें उस कक्षा सम्बनधी आवश्यक शिक्षण सामग्री होना नितान्त आवश्यक है । लहरकक्ष में सभी स्तर के बच्चों के लिए बैठने के लिए फर्नीचर होना चाहिए । ग्रीन बोर्ड छोटे बच्चों के लिए खेल खिलौने हो जिससे वे शिक्षण में आनन्द अनुभव कर सके ं ।

1.पाठ – भाषा विषयों के लिए 2.अवधारणा गण्ति विषय में 3. थीम पर्यावरण 4.घटक उपविन्दु के लिए प्रयुक्त होता है ।

M- MINIMAM L- EARNING L- LEAVEL A- ACTIVIT B- BESED L-LEARNING

कलस्टर कार्यशालाएॅ कक्षा 1 से 5 तक अध्यापन करवाने वाले हिन्दी पर्यावरण अंग्रेजी एवं गणित विषय के अध्यापको के लिए माह में एकबार कलस्टर पर शिक्षण गति विधियों को बहत्तर बनाने के लिए विषय के सन्दर्भ व्यक्तियों के साथ विचार विमर्श एवं अनुभूत कठिनाईयों के निराकरण हेतु समूह चर्चा करना ।

B-BLOCK R-RESOURS S- SCHOOL – खण्ड स्तरीय वह विद्यालय जिसको उस ब्लॉक में एस आई क्यू ई के अन्तर्गत आदर्श विद्यालय के रूप में चयनित कर आधार भूत सुविधाएॅ उपलब्ध करवाकर क्षेत्र के समस्त विद्यालयों के लिए आदर्श /अनुकरणीय बनाना । उस विद्यालय का संस्था प्रधान के. आर. पी. के रूप से प्रशिक्षित होगा ।

□□□□- □□□□□□□ □□□□□□□□ □□□□□□□□ □□□□□□□□□ विशेष अधिगम सहायक सामग्री – समूह दो के बच्चों के लिए स्पेशियल लर्निंग सपोर्टिंग मेटेरियल तैयार किया गया है जिसके माध्यम से कक्षा स्तर से नीचे के बच्चो को कक्षा स्तर पर लाने के लिए सरलतम विधि से सीखने सीखाने की सहज गतिविधियों का समावेश किया गया है ।

प्रशिक्षण – इस योजना में सभी संस्था प्रधानों हेड टीचर ; अध्यापकों को एवं डाईट प्राचार्य प्रभारी अधिकारी सी. सी. इ. /एस. आइ. क्यू. ई के समस्त निरीक्षण अधिकारियों को विभिन्न स्तरों पर 3 से 6 दिवसीय प्रशिक्षण को रमसा/ एस. एस. ए. के माध्यम से बोध शिक्षा समिति से प्राप्त करना अनिवार्य है ।

परिचय – सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन का अर्थ निरन्तर एवं विस्तृत रूप में छात्र का मूल्यांकन करना है । हम सभी बच्चों के बारे में चिन्तित है इसलिए हम सब का सरोकार इस बात से है कि हर शाला ऐसी जगह बने जहॉ हर बच्चे को सीखने के मौके मिले । बच्चो की शिक्षा से जुडे सभी लोग विशेषकर शिक्षक इस सम्बन्ध में अपने आप को बहुत ही जिम्मेदार मानते है । सभी बच्चो के गुण एवं रूचियों के विकास में मदद करने के लिए तत्पर है। वे विश्वास के साथ अपनी जिन्दगी का सामना करने के लिए तैयार करना चाहते है । शिक्षक आकलन को अपने विद्यालय की रोजमर्रा की महत्वपूर्ण गतिविधि के रूप में देखते है । शिक्षक दैनिक आधार पर जो कुछ भी करते है बच्चों का आकलन एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन गया है । ऐसा क्यों –

महत्वपूर्ण कारण यह जानना है कि

1– बच्चो को जो कुछ भी सीखाना चाहिए क्या वे सीख पा रहे है ?

2–एक अवधि विशेष में बच्चों की प्रगति के बारे में भी जानकारी प्राप्त करना ।

3– बच्चे की भिन्न भिन्न विषय/क्षेत्रों में क्या विशेष उपलब्धियॉ रही ऐसा इसलिए की हम विद्यार्थियों को गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा देना चाहते है । ऐसा तभी सम्भव है जब बच्चों का परीक्षाओं एवं परखों के माध्यम से पढाये गये विषयों का मूल्यांकन करना परीक्षणो का एक उद्देश्य है । पर यदि हम वास्तव में बच्चों को बेहत्तर तरीके से सीखाने में मदद करना चाहते है तो हमें खास तौर से समझने की जरूरत है । परखों में बच्चो द्वारा प्राप्त किये गये अंक एवं ग्रेड बच्चों की प्रगति या सीखने के बारे में क्या कुछ विशेष बता पाते है मूल्यांकन से सिर्फ यही पता लगता है कि बच्चे कितना नही जानते बजाये इसके कि बच्चे क्या जानते हैं ? और क्या कर सकते है ? इस प्रकार का मूल्यांकन पाठ्य पुस्तकों में पढाई गयी विषय वस्तु और रटन्त प्रणाली द्वारा प्राप्त की गयी जानकारी ज्ञान का आकलन करने तक ही केन्द्रित है । वास्तव में यह बच्चों में तुलना करने जैसे भाव रखता है और अवांछनीय प्रतिस्पर्धा को जन्म देता है । मूल्यांकन से कुछ बच्चो को असुरक्षा तनाव चिन्ता और अपमान जैसी स्थितियों का सामना करना पडता हैं ।

आकलन –आकलन के जरिये हम उनमें क्या खोजते है हम वास्तव में किस चीज का आकलन कर रहे है क्या परीक्षाओ परखों के अलावा और भी तरीके हो सकते है क्या अंको एवं ग्रेड के रूप में रिपार्ट करना पर्याप्त है आकलन से बन्द सूचनाऍ किस तरह की मदद करती है । हम अपने काम को कठिन बनाये बगैर बच्चों के सीखने के बारे में सूचनाऍ किस तरह की इकट्ठी कर सकते हैं । अन्तिम प्रश्न शिक्षक रोजाना ही बहुत सी समस्याओं का सामना करते है । जैसे विद्यार्थियों की अधिक संख्या एक साथ दो तीन या अधिक कक्षाओ को एक साथ बैठाकर पढाना और इसके साथ ऐसे बच्चो को पढाना पडता है जो भिन्न भिन्न पृष्ठभूमि से आते है भिन्न भाषा बोलते है जिनकी विशेष आवश्यकताऍ भी होती है ।

शिक्षक –जो चाहते है कि बच्चा अपनी अधिकतम योग्यता के अनुसार सीखें । अधिक समय धैर्य और समझ की जरूरत है । इस तरह की परिस्थितियों में शिक्षको द्वारा मदद किस तरह से की जा सकती है । बच्चो और उनके सीखने के बारे में समझा बनाना । एक पल के लिए अपने बचपन की और चलना पडेगा और वर्तमान समय की कक्षाओं और बच्चो के बारे में सोचना होगा जिन्हे हम teach करते है । हर बच्चे की पसन्द नापसन्द रूचियॉ, कौशल और व्यवहार के तरीके भिन्न होते है । हर बच्चा अद्वितीय है । इसलिए हर बच्चे में निहित क्षमताओ और भिन्नताओ को पहचानना होगा और इस सच्चाई को

स्वीकार करे की सीखने के दौरान भिन्न भिन्न तरीको से प्रतिक्रिया करते है और समझते है । बच्चा ना तो कोरी स्लेट है जिन्हे उन सूचनाओं से भरना जो केवल शिक्षक के पास है । बच्चे अनुभवो के साथ साथ वि|ालय में आते है उन्ही को सीखाने का आधार बनाना है ।

1– सभी बच्चे सीख सकते है यदि उन्हे अपनी गति और अनुभव का इस्तेमाल करके सीखने दिया जाये ।

2–बच्चे खेल के माध्यम से सीखते है । 3–सीखना एक सतत् प्रक्रिया है सीखना केवल विद्यालय में ही नही होता है । 4–सीखने की प्रकिया को घर से जोडा जाना चाहिए । 5– सीखनें के लिए विषय की समग्रता यानि पूर्णता जरूरी है । 6–गलतियॉ बच्चो को विश्लेषण एवं तुलना करने का अच्छा अवसर प्रदान करती है । जिससे बेहतर समझ बनती है । परिस्थितियो में अनुप्रयोग करने की क्षमता विकसित होती है ।

विद्यालय और कक्षा की परख – कक्षा में चल रही सीखने सीखाने की प्रक्रिया काफी हद तक विद्यालय परिवेश और उसकी संस्कृति पर निर्भर करती है । एक सुरक्षित चिन्ता मुक्त सुविधा जनक और खुशनुमा विद्यालयी परिवेश बच्चो को बेहतर तरिके से सीखने और कुछ हासिल करने में मदद करता है । इस प्रयोजन के लिए आवश्यक है कि विद्यालय में कुछ सीखने की सामग्री , उपकरण और गतिविधियॉ आयोजित करने के साथ साथ काम करने के लिए उपयुक्त स्थान होना चाहिए ।

–बाल केन्द्रित शिक्षा –

1–विद्यार्थियों के बीच पाये जाने वाले अन्तरों का ध्यान रखा जायेगा ।

2–आकलन प्रत्येक बच्चे की सीखने की गति एवं तरीकों को ध्यान में रखकर किया जायेगा ।

3– लचीलापन लिए हुए होगा । 4– सतत् एवं सारगर्भित होगा ।

बच्चो का आकलन क्यों किया जाना चाहिए –

1– बच्चे की व्यक्ति गत एवं विशेष जरूरतों को पहचानना

2– अध्यापक एवं बच्चे के मध्य सीखने की स्थितियों की योजना बनाना ।

3– कोई भी बच्चे कया कर सकते है और क्या नही उनकी किन चीजों में विशेष रूचि है यह क्या करना चाहते है उनमें बच्चो की मदद करना ।4– बच्चो को पूर्णतः कुछ करवाने की भावना को प्रोत्साहित करना । 5– कक्षा में चल रही सीखने सीखाने की प्रक्रिया को बेहतर बनाना । 6– बच्चे की प्रगति के कारण तय कर पाना जिन्हे अभिभावकों तक सम्प्रेषित किया जा सके । 7–बच्चों में आकलन के प्रति व्याप्त भय को दूर करना । 8– बच्चे के सीखने एवं विकास में मदद और सुधार की संभावनाएॅ खोजना ।

किसका किस बारे में आकलन किया जाना चाहिए –

शिक्षा बालक के समग्र विकास से जुडी हुई है शारीरिक मानसिक सामाजिक नैतिक भावनात्मक एवं आध्यात्मिक संज्ञानात्मक संवेगात्मक कौशलातमक रूचयात्मक रूझान आदि । इसलिए सभी पहलुओ का आकलन किया जाये और feed back पुनर्बलन दिया जाये ।

1– भिन्न भिन्न विषयों क्षेत्रों में बच्चो का सीखना और प्रदर्शन कौशल रूचियॉ और अभिप्रेरणा एक निश्चित अवधि में सीखने एवं व्यवहार में होने वाले परिवर्तनो विद्यालय एवं बाहर मौजूद भिन्न भिन्न परिथतियों और अवसरों के प्रति बच्चो की प्रतिक्रिया को समझना ।

आकलन कब किया जाना चाहिए –

1नियमित रूप से आकलन करने के आधार पर कुछ प्रतिक्रिया करने पृष्ठ पोषण देने और सुधार सम्बन्धी तरीको को अपनाने के लिए कुछ विधियॉ तय की गयी है

परियोजना के उददेश्य :– राज्य के समन्वित रा उ मा /मा वि में कक्षा 1 से 10 व /12 में कक्षा 1 से 5 तक में वि|ार्थियों के शैक्षिक स्तर उन्नयन के उददेश्य से **"इनिशिएटिव फॉर क्वालिटी एज्यूकेशन "** परियाजना प्रारम्भ की गई है ।

कक्षा 1 से 5 तक अध्ययनरत वि|ार्थियों के अधिगम स्तर में गुणात्मक वृद्धि सुनिश्चित करना ।
बाल केन्द्रित शिक्षण विधा CHILD CENTERED PEDAGOGY (CCP) सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन **सी सी ई** के समन्वित क्रियान्वयन द्वारा प्रतयेक वि|ार्थी के अधिगम स्तर एवं उपलब्धि को सुनिश्चित करना ।

प्राथमिक कक्षाओ के वि|ार्थियों का Transition Rate (रफतार दर) मे उच्चतम स्तर तक सुधार लाना ।

कक्षा 1 से 5 तक नामांकित सभी बच्चों का उनकी आयु व कक्षा के अनुरूप शैक्षिक स्तर सुनिश्चित करना । वि|ालयों में बाल केन्द्रित शिक्षण विधा के क्रियान्वयन के लिए सभी शिक्षको का क्षमतावर्धन करना । इसके लिए कलस्टर कार्यशाला एवं वी सी प्रसारण के माध्यम से शिक्षकों का अभिवर्धन करना

वि|ालय प्राचार्य एवं प्रभारी प्रारम्भिक शिक्षा को अकादमिक सहयोग कर्त्ता के रूप में तैयार करना ।

जिला स्तर पर योजना के संचालन हेतु अकादमिक समूह तैयार कर क्षमता संवर्धन करना ।

शिक्षको हेतु निर्देश –

1–कक्षा 1 से 5 तक के पाठ्यक्रम को 4 अर्म में विभाजित किया गया है । 2.– शिक्षण सत्र को 2 माह 15 दिन के 4 अर्म में विभाजित किया गया है । प्रथम 1 जुलाई से 15 सितम्बर द्वितीय 16 सितम्बर से 30 नवम्बर तीसरी 1 दिसम्बर से 15 फरवरी चतुर्थ 16 फरवरी से 30 अप्रैल 16 तक

3–प्रत्येक टर्म में 55–60 कार्य दिवस मिल जायेंगें । 4–यह टर्म अवधि योगात्मक आकलन अवधि होगी जिसके बाद आगामी टर्म के उद्देश्य निर्धारित कर पहली की तरह कार्य करना होगा । 5– हर टर्म में दो रचनात्मक आकलन करना होगा व एक योगात्मक आकलन के बाद बच्चों में रही कमजोरी का उपचारात्मक शिक्षण भी करवाना होगा । 6–शिक्षक अवलोकन अभिलेखन चैकलिस्ट पोर्ट फोलियों होम वर्क, कार्य पत्रक बातचीत एवं प्रोजेक्ट गतिविधियों के आधार पर सतत् आकलन करेगा । 7– आकलन योजना से प्राप्त सूचनाओं परिणामों के आधार पर बच्चों के समूह/ उपसमूह के पाक्षिक शिक्षण की योजना बनाये ।

यदि पाक्षिक योजना में मध्यवृति परिवर्तन की आवश्यकता पडे तो साप्ताहिक समीक्षा की जानी चाहिए । 9– प्रथम दो माह में पाठ्यक्रम का प्रथम टर्म पूरा हो जाना चाहिए । 10– सतत मूल्यांकन के आधार पर प्रथम योगात्मक मूल्यांकन किया जाये । यह कार्य 10 से 20 सितम्बर के मध्य सुनिश्चित किया जाये । द्वितीय योगात्मक मूल्यांकन 20 से 30 नवम्बर तक दर्ज किया जायें । तृतीय योगात्मक मूल्यांकन 10 से 20 फरवरी एवं चतुर्थ योगात्मक मूल्यांकन 15 से 25 अप्रैल के मध्य हों । बच्चों की प्रगति को फार्मेटिव (रचनात्मक) एवं (योगात्मक) समेटिव फार्मेट में दर्ज करने के लिए ग्रेड दिया जाना तय किया गया है । इसका आधार इस प्रकार है – A स्वतंत्र रूप से कर लेता है / आगामी स्तर पर B शिक्षक की मदद से कर पाता है/ मध्यम स्तर C विशेष मदद की आवश्यकता है / आरम्भिक स्तर

अध्यापक योजना डायरी – विद्यार्थी के सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन के लिए कुल 1से 230 तक पेज होते है जिसमें कक्षा 1 से 5 तक की किसी एक विषय के अध्यापक द्वारा पाक्षिक योजना बनाई जाती है जिसमे विद्यार्थी का नाम और नामांक होते है ।

पाठ भाषा विषयों के लिए

अवधारणा– गणित

थीम/धटक पर्यावरण

समूह एक के बच्चों के रोल नम्बर कक्षा स्तर के बच्चे ।

समूह दो के बच्चों के नामांक कक्षा स्तर से न्यून स्तर के बच्चे ।

अधिगमस्तर एवं आवश्यकताओं के अनुसार कक्षा में विद्यार्थियों की स्थिति एवं लक्ष्य

सम्पूर्ण कक्षा के लिए शिक्षण उद्देश्य आधारित गतिविधि सामूहिक उपसमूह एवं व्यक्तिगत सतत् आकलन योजना ।

साप्ताहिक –समीक्षा एवं अनुभव पाक्षिक

पाक्षिक योजना में अधिगम उपलब्धि संस्था प्रधान का अभिमत ।

चैक लिस्ट – रचनात्मक आकलन को दर्ज करना जिसमें प्रतिमाह किये गये फोरमेटिव आकलन को दर्ज करना होता है जो संसूचकों के सापेक्ष होता है ।

योगात्मक आकलन दर्ज करना साल में चार बार । लेखन पठन की बुनियादी क्षमता से सम्बन्धित सतत् आकलन की स्थिति – कक्षा स्तर से न्यून स्तर के बच्चों की स्थिति के बारे में । इसमें नामांक के लिए जगह रिक्त होती है ताकि उन बच्चों के नामांक लिखे जो न्यून स्तर के है ।

एस. आई. क्यू. ई. के उद्देश्य

1.1बाल केन्द्रित शिक्षण द्वारा सीखने के पर्याप्त अवसर उपलब्ध कराना ।
1.2 बच्चों में परीक्षा के भय को दूर करना ।
1.3 गतिविधि आधारित शिक्षण द्वारा शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को रूचिकर ,आनन्ददायी एवं प्रभावी बनाना ।
1.4 ज्ञान को स्थायी और प्रभावी बनाते हुए प्राथमिक शिक्षा की नींव को मजबूत करना ।

1.5 बच्चों में सृजनात्मक एवं मौलिक चिन्तन का विकास करना ।

1.6 स्तरानुसार शिक्षण योजना बनाकर शिक्षण कार्य करते हुए शैक्षिक प्रगति को नियमित रूप से दर्ज करना ।

1.7 बच्चों को पर्याप्त अवसर उपलब्ध करवाते हुए संज्ञानात्मक एवं व्यक्तित्व विकास के सभी पक्षों का मूल्यांकन करना ।

1.8 बालकों के अधिगम स्तर में गुणात्मक विकास के साथ– साथ नामांकन एवं ठहराव में अभिवृद्धि करना

1.9 शिक्षकों का समुदाय से जुडाव के तहत बच्चों की उपलब्धि एवं प्रगति को अभिभवको से साझा करना

प्रधानाचार्य हेतु निर्देश–

1–वि|ालय स्तर पर विषयवार शिक्षको की व्यवस्था करना । 2– कक्षा 1 से 5 तक एक शिक्षक एक ही विषय पढाना सुनिश्चित करे । 3– वि|ालय में गतिविधि आधारित कार्यक्रम तथा व्यापक एवं सतत् मूल्यांकन की प्रक्रिया को सुनिश्चित करना । 4– प्रधानाचार्य नियमित रूप से कक्षा अवलोकन करे एवं प्रथम दृष्टया बच्चो की प्रगति एवं शिक्षण प्रक्रिया का अवलोकन करे । 5– प्रधानाचार्य पृथक् पृथक् एवं सामूहिक संवाद करे की बच्चों के शैक्षिक प्रगति की क्या स्थिति है एवं क्या चुनौतियॉ है । 6– प्रधानाचार्य इस बात का ध्यान रखे की गति विधि आधारित शिक्षण एवं सतत् एवं व्यापक मूल्याकन केवल फार्मेट भरना नही है । 7– सत्र में दो बार बेसलाइन एवं एण्डलाइन मूल्यांकन का सत्यापन डाइट में अध्ययनरत वि|ार्थियों के द्वारा किया जायेगा । अतः सहयोग प्रदान किया जावे । 8– संस्था प्रधान एवं प्राथमिक विंग के प्रभारी द्वारा सभी वि|ार्थियों का मासिक मूल्यांकन का सत्यापन आवश्यक रूप से किया जावे । 9– वि|ालय स्तर पर फिडिंग का कार्य आई सी टी लैब में करवाया जाये । लैब नही है तो छात्र मद या विकास मद से व्यय किया जाये। 10– कक्षा– कक्ष गति विधियों को बाल–केन्द्रित गतिविधि आधारित बनाने के लिए सहायक शिक्षण सामग्री कक्षा सौन्दर्यीकरण पुस्तके सीडी लहर – कक्ष आदि की व्यवस्था की जावें। 11– वि|ार्थियों की प्रगति की जानकारी मासिक अभिभावक बैठक में अनिवार्यतः दी जावे।

AA ,l- vkbZ- D;w- bZ- dk;Zdze ds vUrxZr AA

AA laLFkk iz/kku ds }kjk voyksdu izzi= AA

अध्यापक का नाम श्री ————————————————————————————कक्षा————————————————

विषय———————————— दिनांक———————————कालांश ————————————————

कक्षा में कुल विद्यार्थी——————————————परिवीक्षण के दिन उपस्थित विद्यार्थी संख्या——————

कक्षा स्तर पर विद्यार्थियों की संख्या————————कक्षा स्तर से नीचे विद्यार्थियों की संख्या——————————

कक्षा में शिक्षण अधिगम प्रक्रिया अवलोकन के आधार पर सही का निशान लगाये ।

कम सं.	अवलोकन के लिए बिन्दु	निशान अंकित करे	टिप्पणी
4.1	**विद्यार्थियों एवं शिक्षक के मध्य अन्तर्सम्बन्ध**		
1.1	बच्चे सहज व भय मुक्त है तथा शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में भाग ले रहे है		
1.2	केवल कुछ ही बच्चे भाग ले रहे है		
1.3	अधिकतर बच्चे भाग नही ले रहे करीब एक चौथाई से कम		
4.2	**शिक्षक की शिक्षण विधि**		
2.1	पूर्व ज्ञान से जोडकर		
2.2	विषयवस्तु पर चर्चा द्वारा		
2.3	शिक्षण सहायक सामग्री की सहायता से		
2.4	शिक्षक द्वारा पाठ्य पुस्तक से		
2.5	विद्यार्थियों द्वारा पाठ्य पुस्तक से		
4.3	**कक्षा की बैठक व्यवस्था कालांश के दौरान**		
3.1	बच्चे एवं शिक्षक दोनो एक गोले में समान स्तर पर बैठे है		
3.2	बच्चे छोटे छोटे उपसमूह बनाकर बैठै है व शिक्षक अलग– अलग उपसमूह में जाकर मदद कर रहे है ।		
3.3	बच्चे सीधी रेखाओं में बैठे है व शिक्षक कुर्सी से निर्देश दे रहे है ।		
4.4	**शिक्षण कार्य में विद्यार्थियों की भागीदारी**		
4.1	कक्षा व्यवस्थित है व अधिकतर बच्चे सीखने सीखाने की प्रक्रिया में भाग ले रहे है ।		
4.2	कुछ बच्चे ही सक्रिय है		
4.3	बच्चे यांत्रिक रूप से कार्य कर रहे है		

4.4	शिक्षण के अलावा अन्य कार्य में व्यस्त		
4.5	**जो बच्चे कक्षा स्तर को प्राप्त नही कर सके है उनके साथ विशेष कार्य किया जा रहा है**		
5.1	कक्षा स्तर के अनुसार योजना बनी है और क्रियान्वित हो रही है		
5.2	कक्षा स्तर निर्धारण है परन्तु कक्षा में शिक्षण एक ही तरीके से किया जा रहा है		
4.6	**क्या उच्च स्तरीय पाठ्यक्रमणीय उद्देश्यों पर कार्य होता देखा गया ।**		
6.1	प्रश्न पूछना चर्चा करना खोजबीन निष्कर्ष निकालना इत्यादि प्रक्रिया विद्यार्थियों में धटित होती दिखाई गयी		
4.7	**शिक्षक की योजना व तैयारी**		
7.1	शिक्षक पूर्व योजना व तैयारी के साथ काम करते नजर आये		
7.2	योजना बनी हुई थी पर विद्यार्थी स्तर के अनुरूप नही		
7.3	कोई योजना नही बनाई गयी थी		
4.8	**सी सी ई / सी सी पी की समझ**		
8. 1	पर्याप्त व स्पष्ट है		
8.2	कार्यशाला में काम करने की आवश्यकता है		
4.9	**सी सी ई पर प्रक्रियात्मक कार्य (अध्यापक योजना डायरी रचनात्मक आकलन चैक लिस्ट योगात्मक आकलन)**		
9.1	निर्धारित प्रक्रिया के साथ पूर्ण है		
9.2	सभी अपूर्ण है		
9.3	दस्तावेजों पर कोई काम नही किया है		
4.10	**पोर्ट फोलियो पर काम (वार्षिक योजना के अनुसार सभी बच्चों के अभ्यास पत्रक मय टिप्पणी व तिथि**		
10.1	पोर्ट फोलियो उक्तानुसार पूर्ण है		
10.2	अपूर्ण है और बेसलाईन योगात्मक आकलन के अलावा कोई अभ्यास पत्र नही है		
4.11	**गत अवलोकन मे दिये गये सुझाावों की पालना का विवरण लिखे ।**		

सुझाव– 12.1 शिक्षण कार्य एवं योजना से सम्बन्धित .....

.....

.....

.....

.12.3 विद्यार्थियों के शैक्षिक स्तरो से सम्बन्धित .....

.....

.....

हस्ताक्षर अध्यापक	हस्ताक्षर हैड टीचर	हस्ताक्षर संस्था प्रधान
मय दिनांक	मय दिनांक	मय दिनांक

गोविन्द नारायण शर्मा

छः दिवसीय आवासीय शिक्षक प्रशिक्षण शिविर

विषय - हिन्दी

दिनांक 5/6/2017 से 10/6/2017 तक

शिक्षण में सहायक सामग्री की उपयोगिता

चित्र की सहायता से पशु - पक्षियों की जानकारी

1. पशु - पक्षियों के नामों की जानकारी
2. पशु - पक्षियों के वर्ण की जानकारी
3. पशु - पक्षियों के भोजन एवं आवास की जानकारी।

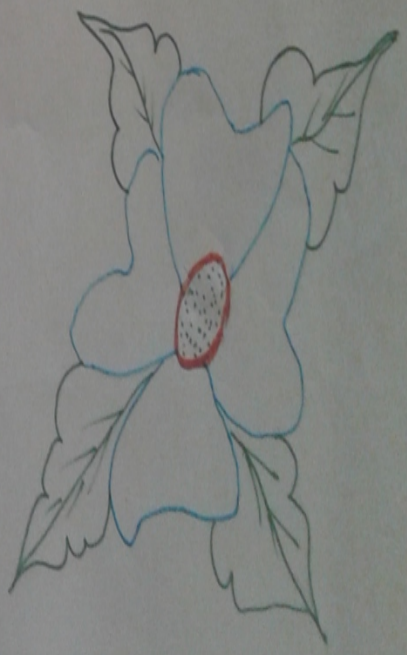

समूह नं. - 4

1. शारदा रावत
2. विनिता गोपालिया
3. नीलम मीणा
4. राजेश गोडेश्वर
5. मीना मालाकार
6. जुगराज चौधरी
7. जागृति परिहार
8.

मार्ग दर्शक - श्री गोविन्द नारायण शर्मा

छः दिवसीय आवासीय शिक्षक प्रशिक्षण शिविर

"दिनाँक 5.6.17 से 10.6.17 तक"

दिनाँक :- "06.06.17"

"संदर्भ :- "शिक्षण अधिगम में पुस्तकालय की भूमिका"

1. भूमिका :-

ज्ञान की देवी माता सरस्वती की उपासना के लिए दो मंदिर है. एक विद्यालय और दूसरा पुस्तकालय। विद्यालय में हम गुरु के चरणों में बैठकर शिक्षा ग्रहण करते है. और पुस्तकालय में बैठकर मौन अध्ययन करते है। सबसे बडा [विश्व का] पुस्तकालय अमेरिका में है, जहा 4 करोड़ से अधिक पुस्तके है। वही भारत में कोलकोता में सबसे बडा पुस्तकालय है. जिसमें दस लाख पुस्तकें है।

2. पुस्तकालय का महत्व :-

1. पुस्तकालय में अनेक शिक्षाप्रद पुस्तके होती है. जिनमे से विद्यार्थी अपनी रूचि एवं क्षमता के अनुसार पुस्तक चयन कर ज्ञानार्जन कर सकता है।
2. पुस्तकालय से विद्यार्थियों में स्वाध्याय की भावना का विकास होता है।
3. पुस्तके पढने से छात्रों में मानसिक व सृजनात्मक विकास होता है। साथ ही प्रतिस्प्रर्धा की भावना उत्पन्न होती है।
4. विद्यार्थियों को नये-नये शब्दों का ज्ञान होता है तथा शब्दों के भावार्थ का पता चलता है।
5. पुस्तकालय की पुस्तकों द्वारा विद्यार्थियों में साहस, वीरता, हास्य, चरित्र निर्माण के साथ-साथ पद्य की विभिन्न विधाओं का विकास होता है।
6. लेखन, मौखिक अभिव्यक्ति कौशल का विकास होता है।
7. पुस्तकालय की विभिन्न पुस्तकों में मुद्रित चित्र छोटे बच्चों में सहायक सामग्री [T.L.M] की भूमिका निभाते है।
8. पुस्तकालय की संदर्भ पुस्तके क्षमता वर्धन का कार्य करती है।

निष्कर्ष :- पुस्तकालय हमारे शैक्षिक, सामाजिक, मानसिक, आत्मिक और सांस्कृतिक विकास में अत्यधिक सहायक हो सकते है। 1. "महात्मा गांधी के अनुसार" :- भारत मे प्रत्येक घर में एक पुस्तकालय होना चाहिए। सम्पूर्ण विकास के लिए यही रामबाण औषधि है।

2. "तिलक के अनुसार" :- मैं नरक में भी उत्तम पुस्तकों का स्वागत करूंगा, क्यों कि जहाँ पुस्तकें होगी, वही स्वर्ग बन जायेगा।"

मार्गदर्शक :- श्री गोविन्द नारायण शर्मा

श्री वरुण सेन

ग्रुप सदस्यों के नाम :-

1. चतुर्भुज शर्मा
2. रूपचन्द
3. केनिथली
4. सुरेन्द्र सिंह राठौड़
5. उमराव अली
6. जयशंकर मौर्य
7. महेश चोटवानी
8. गोविन्द सिंह राठौड़
9. राजेन्द्र सिंह राठौड़

छः दिवसीय SIQE प्रशिक्षण KGBV श्रीनगर

पाठ-योजना

दिनांक 5.6.17 से 10.6.17 तक

विषय- हिन्दी कक्षा- III टर्म- I

थीम – कविता → देश की माटी -

सम्पूर्ण कक्षा के शिक्षण अधिगम उद्देश्य → सुनी/पढ़ी कविता को लय एवं हावभाव के साथ स्पष्ट शब्दों में पहल करते हुए अभिव्यक्त कर सके 2. उचित गति स्पष्ट उच्चारण हाव एवं आनन्द भाव एवं आनन्द लेते हुए पढ़ सके (3) चित्र के अनुसार रंग संयोजन कर सके।

सम्पूर्ण कक्षा के लिए प्रस्तावित गतिविधियाँ

सामूहिक, उपसमूह, व्यक्तिगत

सामूहिक- कविता का सस्वर वाचन करवाना, कविता का भावार्थ समझाना कठिन शब्दों को श्यामपट्ट पर लिखना।

उपसमूह में → श्यामपट्ट पर लिखे कठिन शब्दों का अर्थ याद करवाना। -विपरित अर्थ वाले शब्दो का मिलान कराना

आशा	विदेश
इच्छा	कमजोर
शक्तिशाली	निराशा
देश	अनिच्छा

व्यक्तिगत → प्रत्येक छात्र से कविता की पंक्तियाँ पढ़वाना कठिन शब्दों के अर्थ पूछना।

सतत आकलन योजना

छात्रों की रुचि, एकाग्रता, सहभागिता का आकलन

विलोम शब्दों को समझकर मिलान करने का आकलन

समीक्षा / अनुभव

विद्यार्थी कविता का सस्वर आनन्द ले रहे थे।

कविता सुनिता बड़ी रुचि से कविता को याद कर रही थी।

सोनू मोनू को भावार्थ समझाने में और अभ्यास की आवश्यकता

समूह 1 के लिए क्षमता संवर्धन योजना

1. देशभक्ति से जुड़ी अन्य कविता का संकलन अपनी अभ्यास पुस्तिका में करवाना।
2. चित्र बनाकर रंग संयोजन करना

अधिकांश विद्यार्थी आ की मात्रा पर अपनी पहचान बना चुके थे।

समूह 2 के लिए शिक्षण उद्देश्य

(1) आ ा, इ ि की मात्रा के शब्द पहचानकर पढ़ सकें। (2) कविता को सुनकर याद कर सकें।

समूह 2 के लिए आवश्यकतानुसार शिक्षण योजना (सामूहिक, उपसमूह, व्यक्तिगत)

सामूहिक → आ की मात्रा के शब्द बुलवाना। →

आम	काम	कराना
राम	नाना	जगाना

इ ि की मात्रा के शब्द बुलवाना। किला खिला मिला सिला।

आ व इ ि की मात्रा के शब्द कविता में से छाँटकर लिखना- माटी, हवा, बाट विमल आदि।

बिना मात्रा के शब्द बुलवाना- जल, सरल, घर आदि।

उपसमूह → अन्तिम वर्ण से शुरू वाले शब्दों से नए शब्द बनाना जैसे-

जल → लत, ललक, लटक, लपक, लहर

घर → रथ, रत, रट, रख, रहट, रबर

व्यक्तिगत → चित्र दिखाकर उसमें चित्रित आकृति पर बातचीत करना।
लेख सुधार हेतु कविता को लिखवाना।

पाक्षिक योजना में अधिगम उपलब्धि

अधिकांश छात्र कविता को कंठस्थ कर चुके थे।
छात्रों के नवीन शब्द भण्डार में वृद्धि हुई।
देश प्रेम व परोपकार की भावना का विकास हुआ।

संस्था प्रधान का अभिमत

ग्रुप - 1

1. श्रीमती वीना गोयल
2. " अनिता कजोत
3. " चन्द्रकला शर्मा
4. " मंजु लता चौहान
5. " चन्द्र कान्ता
6. श्रीमती भावना शर्मा
7. " पुष्पा बसंलवाल
8. मंजु चौहान
9. अन्जु तंवर
10. मीना कोली
11. बिम्पल गौड़

मार्गदर्शक

श्री गोविन्द नारायण शर्मा

श्री बाबा खेन

कथा शिक्षण

समूह - 2

पाठ/अवधारणा :- बुद्धिमान खरगोश विषय- हिन्दी कक्षा- 4

अधिगम उद्देश्य :- (1) छात्र कहानी-चर्चा के दौरान अपने विचार व्यक्त कर सकेगें।
(2) पाठ्य सामग्री को धारा प्रवाह के साथ पढ़ सकेगें।
(3) कहानी संदेश को अपने शब्दो मे लिख सकेगें।
(4) कहानी में आए वाक्यो में सर्वनाम शब्दो का चयन कर सकेगें।

शिक्षण योजना	सतत् आकलन
पुस्तक में से चित्र दिखाकर बच्चों से प्रश्न पूछते हुए ...का प्रारम्भ किया जायेगा। ...न मे आपको कौन- कौन से जानवर दिखाई दे रहे है? ...जानवर कहाँ रहते हैं? ...शक्तिशाली व बुद्धिमान जानवर कौन सा होता है? ...ान खरगोश की कहानी पढेगें। ...ो को समूह में विभाजित कर कहानी वाचन करवाय... (2) कहानी पर छात्रो से चर्चा करते हुए कहानी के माध्यम से मिलने वाले संदेश को अपनी पाठ्य पुस्तिका में लिखवाया जायेगा।	सामूहिक चर्चा के दौरान बच्चो की पूर्ण सहभागिता रही। कहानी से प्राप्त शिक्षा के प्रति समझ का आकलन किया गया।
व्यक्तिगत कार्य:- प्रत्येक विद्यार्थी से अपने मनपंसद जानवर का नाम व चित्र बनाने व उस पर पाँच वाक्य लिखवाये जायेगें।	
क्षमता संर्वधन :→ विद्यार्थियो से कहानी मे आए ऐसे वाक्यो को छाँटकर लिखवाना जिसमे सर्वनाम शब्दो का प्रयोग हुआ हो।	कार्यपत्र को की जाँच करना
उपलब्धियाँ:→ विद्यार्थियों को नवीन शब्दो का ज्ञान, कठिन शब्दों का उच्चारण व अर्थ का ज्ञान, संज्ञा, सर्वनाम शब्दो की पहचान तथा सहज भाषा मे कहानी की अभिव्यक्ति व कहानी से प्राप्त शिक्षा का ज्ञान हुआ।	
प्रशिक्षक - श्री गोविन्द नारायण शर्मा श्री वरुण सेन	

ग्रुप के सदस्य:- (1) कृष्णा वर्मा (2) मिनाक्षी रावत (3) कृष्णा वर्मा (4) मुकेश कुमारी (5) मंजूलता रत्नू (6) अनुपमा वर्मा (7) सुनिता जैन (8) ओनिता स्वामी (9) नेहा शर्मा (10) शबनम बानो

(गोविन्द नारायण शर्मा) RES
प्रधानाचार्य– रा उ मा वि कुचील अजमेर
मोबाईल 9660408232

।। इति शुभम् ।।